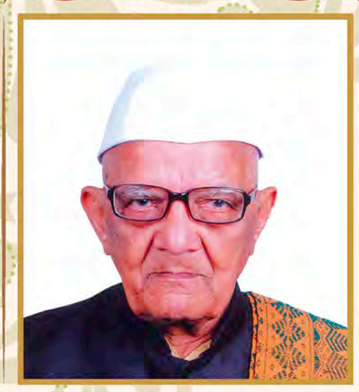

डॉ० श्री डाह्याभाई करुणाशंकर शास्त्री

Dr. Shri Dahyabhai Karunashankar Shastri



पद्म श्री
Padma Shri



राष्ट्रपति से अलंकरण प्राप्त करते हुए

Receiving the decoration from the President

डॉ० श्री डाह्याभाई करुणाशंकर शास्त्री

डॉ. श्री डाह्याभाई करुणाशंकर शास्त्री, भारत के अत्यन्त सुशिक्षित संस्कृत विद्वानों में से एक हैं।

2. आपका जन्म 13 मार्च, 1926 को मेहसाना में हुआ। आपने संस्कृत में साहित्याचार्य और व्याकरणाचार्य की उपाधि अहमदाबाद और वाराणसी से हासिल की। आपने 1991 में नाडियाड में बृह्मर्षि शंकर धाम की स्थापना की। आपने संस्थान के परिसर में संस्कृत महाविद्यालय, वेद विद्या भवन, गौ देखभाल केन्द्र, अंग्रेजी अध्ययन केन्द्र, योग केन्द्र, पुस्तकालय, हॉस्टल, भोजनकक्ष, प्रसूति देखभाल केन्द्र भी प्रारम्भ किया और नर्मदेश्वर महादेव (शिवालय) की स्थापना की। आपने उत्तर गुजरात के महेसा में एक दूसरे बृह्मर्षि शंकर धाम की स्थापना की।

3. अपने ऊर्जावान व्यक्तित्व और अथाह ज्ञान के फलस्वरूप, आप विश्व हिन्दू परिषद, गुजरात प्रदेश के अध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद, नई दिल्ली के पूर्व उपाध्यक्ष, धर्म जागरण न्यास और भारत संस्कृत परिषद नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष के पदों पर रहे हैं। इस समय आप विश्व हिन्दू परिषद, गुजरात प्रदेश के संरक्षक, संस्कृत भारती, नई दिल्ली के सदस्य–सह–न्यासी, और प्रख्यात वैदिक सांस्कृतिक पुस्तक प्रकाशन केन्द्र के स्वाध्याय मण्डल किल्लापराडी (वलसाड़), के अध्यक्ष हैं। आपने संस्कृत भाषा के ज्ञान और वैदिक साहित्य प्रसार का भागीरथ कार्य प्रारम्भ किया। इसी के साथ, आप न्यासी के रूप में अनेकों संगठनों से भी जुड़े हुए हैं।

4. आपने गुजरात के संस्कृत विद्यालय के आचार्य (प्रिंसिपल) और गुजरात के संस्कृत विद्यालयों के शिक्षा निरीक्षक के रूप में भी अपनी सेवाएं दी हैं। आप गुजरात के संस्कृत विद्यालयों के लिए एक सफल मार्गदर्शक रहे हैं। आपने–लांगा संस्कार, ब्राह्मण, स्मरणसुधा, जीवनसुधा, सप्तसुधा, प्रमुख पीयूष, संस्कृति सुधा, भारतीय तत्वदर्शन, स्तुतिसुधा, आचमन, वैदिक आचार संहिता, वैदिक वांगमय परिचय और गौवंश महिमा जैसी अनेकों पुस्तकों की रचना की और उनका सम्पादत भी किया। सांस्कृतिक, राष्ट्रीय, धार्मिक और आध्यात्मिक मूल्यों को बचाने में आपकी सक्रिय भागीदारी अतुल्य है।

5. आपको 1997 में वेद शास्त्री पारंगत संस्कृत पंडित सम्मान, 2000 में संदीपनी गौरव पुरस्कार, ब्रह्मरत्न पुरस्कार (उत्तर गुजरात ब्रह्म समाज), भगवान यज्ञवाल्क्य वेद तत्वज्ञान योगाश्रम द्वारा संस्कृत विद्यावारिधि पुरस्कार जैसे अनेक पुरस्कार प्रदान किए गए हैं। इसके अतिरिक्त, आपको बृहद् गुजरात संस्कृत परिषद और उमरेथ पीपुल्स को–ऑपरेटिव बैंक द्वारा भी सम्मानित किया जा चुका है। आपको 2009 में अखिल गुजरात एस्ट्रोलॉजिकल सोसाइटी (विद्वतसम्मान) द्वारा अगास पुरस्कार, आनन्द खेड़ा जिला सद्भावना परिवार ट्रस्ट द्वारा सद्भावना पुरस्कार, उमरेथ ब्रह्म समाज द्वारा बृह्मर्षि रत्न पुरस्कार, संस्कार भारती नाडियाड द्वारा पूजन पुष्प पुरस्कार, जीवनदीप संस्कार परिवार बड़ौदा द्वारा संस्कार पुरस्कार जैसे अनेकों संस्थानों द्वारा पुरस्कृत किया गया है। हाल 2015 में, गुजरात के महामहिम राज्यपाल द्वारा आपको ग्लोरी ऑव गुजरात पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। वर्ष 2000 में गुजरात के मुख्यमंत्री द्वारा आपको साहित्य गौरव पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपकी सृजनशील लेखनी और संस्कृत भाषा के प्रति आपके प्रेम के लिए वर्ष 2013 में श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा आपको 'डी लिट' की मानद उपाधि प्रदान की गई है। पिछले वर्ष आपके जन्म की 90वीं वर्षगांठ की स्मृति में एक स्मारिका (सूवॅनिअर) निकाला गया था।

Dr. Shri Dahyabhai Karunashankar Shastri

Dr. Shri Dahyabhai Karunashankar Shastri is one of the most learned Sanskrit scholars of India.

2. Born on March 13, 1926 in Mahesana, Dr. Shastri obtained degree of Sahityacharya and Vyakaranacharya in Sanskrit from Ahmedabad and Varanasi. He founded Brhmarshi Sankar Dham in Nadiad in 1991.He also started Sanskrit Mahavidyalay, Veda Vidya Bhavan, cow care centre, English study centre, Yoga centre, Library, Hostel, Dining Hall, Maternity care centre and Narmdeshwar Mahadev (Shivalay) in the premises of the institute. He founded another Brhmarshi Sankar Dham in Mahesa in uttar Gujarat.

3. Dr. Shastri because of his dynamic personality and profound knowledge became President of Vishva Hindu Parishad, Gujarat Pradesh,d Ex-Vice president of Vishva Hindu Parishad, New Delhi, ex-President of Dharma Jagaran Nyas and of Bharat Sanskrit Parishad, New Delhi. At present he is the Patron of the Vishva Hindu Parishad, Gujarat Pradesh, member cum trustee in Sanskrit Bharati, New Delh and President of Swadhyay Mandal Killaparadi (Valasad), renowned Vedic and cultural books publication centre. He has taken up the Herculean task of spreading the knowledge of Sanskrit language and Vedic literature. Along with this, he is also associated with many organizations as Trustee.

4. Dr. Shastri has rendered duties as an Acharya (principal) of Sanskrit Vidyalaya of Gujarat and as an education inspector of Sanskrit Vidyalayas of Gujarat. He has been a successful guide to the Sanskrit Vidyalayas of Gujarat. He has penned down and edited many books-Langa Sanskar, Brhman, Smaransudha, Jivansudha, Saptasudha Pramukh piyus, Sanskruti sudha, Bhartiya tatvadarshan, Stutisudha, Achaman, Vaidic acharsamhita, Vaidic Vangmay parichay and Gauvansh Mahima. His active participation in saving cultural, national, religious and spiritual values is immense.

5. Dr. Shastri is the recipient of many awards such as Ved Shastri Parangat Sanskrit Pandit samman in 1997, Sandeepani Gaurav Puraskar in 2000, Brhmratna award (Uttar Gujarat Brahm-Samaj), Sanskrit Vidyavaridi award by Bhagavan Yagnavalkya Ved Tatvaghyan Yogashram. Besides he has been honoured by Brihad Gujarat Sanskrit Parishad and the Umreth Peoples' co. Operative bank. He was awarded by many institutes like Agas award by All Gijarat Astrological society (Vidvatsamman) in 2009, Sadbhavana Award by Anand Kheda District Sadbhvana parivar Tust, Brahmarshi Ratna Award by Umreth Brahm Samaj, Pujan Pusp Award by Sanskar Bharati Nadiad, Sanskar Award by Jivandeep Sanskar Privar Baroda. He has been conferred Glory of Gujarat award by his Excellency Government of Gujarat recently in-2015. In 2000 he was felicitated with Sahitya Gaurav Purshkar by the Chief Minister of Gujarat. For his creative writing and love for Sanskrit language he has been awarded with honorary degree of 'D.Litt.' by Shree Somnath Sanskrit University in 2013. Last year a Souvenir was launched to commemorate 90th birth anniversary of Shastriji.